हिन्दी विभाग
BA II IV paper डा गीता कुमारी
Date- 8.10.2020
Time - 11.45 to 1.20 pm
विषय - कहानी

बूढ़ी काकी का सारांश

आधुनिक हिन्दी साहित्य मे उपन्यास सम्राट के नाम से प्रसिद्ध कहानीकार प्रेमचन्द की कहानी 'बूढ़ी काकी' मानवीय करुणा की भावना से ओत-प्रोत कहानी है। इसमे लेखक ने बूढ़ी काकी के माध्यम से समाज परिवार की उस समस्या को उठाया है, जहा वृद्धजनो से उनकी जायदाद-सम्पत्ति लेने के बाद उनकी उपेक्षा होने लगती है। केवल इतना ही नही बात-बात पर उन्हे अपमानित और तिरस्कृत किया जाता है, भरपेट भोजन तक भी नही मिलता। सामाजिक यथार्थ के माध्यम से मुंशी प्रेमचन्द ने मनुष्य की स्वार्थी भावनाओ का घृणित एवं वीभत्स रूप चित्रित किया है।

कहानी का प्रारम्भ करते हुए लेखक ने मानव-जीवन के वृद्धावस्था और बाल्यावस्था को एक दृष्टि से देखा है। इसमे कोई संदेह भी नही है। बूढ़ी काकी मे जीभ के स्वाद के अलावा अन्य कोई इच्छा नही थी। उसे विधवा हुए पांच वर्ष का समय व्यतीत हो चुका है। उसके जवान बेटे भी असमय मर चुके थे। इस संसार मे ऐसा कोई नही था, जिसे बूढ़ी काकी अपना कह सके। था तो केवल उसका दूर का भतीजा बुद्धिराम। भलेमानुष पण्डित बुद्धिराम ने बूढ़ी काकी के सामने लम्बे-चौड़े वायदे कर उसकी सब सम्पत्ति अपने नाम लिखवाली। पैसे का लालची बुद्धिराम बहुत जल्दी ही बदलने लगा। बुद्धिराम की पत्नी

रूपा भी व्यवहार से कठोर थी लेकिन ईश्वर से अवश्य उसे डर लगता था। इसलिए वह बूढ़ी काकी से दुर्व्यवहार करते समय डरती थी।

बुद्धिराम और उसकी पत्नी का व्यवहार बूढ़ी काकी के प्रति दिन-दिन कठोर होता चला गया। यहां तक कि जिस बुढ़िया की जायदाद से सौ-डेढ़ सौ रुपये प्रतिमाह की आमदनी थी वह भोजन तक के लिए तरसने लगी। बूढ़ी काकी जीभ के स्वाद के आगे विवश होकर रोने-चिल्लाने लगती थी। हाथ पैरों से लाचार बुढ़िया जमीन पर पड़ी रहती और अपने प्रति उपेक्षा पूर्ण व्यवहार पर चीखती-चिल्लाती। बुद्धिराम के दोनों बेटे भी उसे चिढ़ाने-परेशान करने से खुश होते थे। यहां तक कि वे दोनों उस बुढ़िया के ऊपर अपने मुंह का पानी भी उड़ेल देते थे। लेकिन बुद्धिराम की बेटी लाडली बूढ़ी काकी से बहुत प्यार करती थी। लाडली भइयों से डर कर बूढ़ी काकी की कोठरी में आ जाती थी और चना-चबेना जो कुछ भी होता था मिल बाँटकर बूढ़ी काकी के साथ खाती थी।

कुछ समय बाद बुद्धिराम के बेटे सुखराम की सगाई थी। जिसमें भाग लेने के लिए काफी मेहमान आए हुए थे। सारे गांव में खुशी का

माहौल था। चारपाइयों पर आराम कर रहे मेहमानों ~~आए हुए थे~~ सार-भाव में ~~खुशी का माहौल था~~। की नाई सेवा कर रहे थे। कहीं भाट प्रशंसा में यश-गान कर रहे थे। रूपा को भी औरतों से फुरसत नहीं थी दौड़-दौड़कर इधर से उधर भाग रही थी।

हलवाई भट्ठियों पर काम कर रहे थे। कहीं पूड़ियाँ पक रही थी तो कहीं मिठाइयाँ बन रही थी। खाना पकने की सुगन्ध सारे घर में फैल चुकी थी।

भीतर ही भीतर बूढ़ी काकी का मन भी ललचा रहा था। परन्तु वह सोच रही थी कि जब उसे भरपूर भोजन ही नहीं मिलता तो मिठाई और कचौड़ी कौन खिलाएगा। यह सोचकर उसकी जीभ लपलपा ~~रही~~ और दिन होता तो वह

रो चीखकर सभी का ध्यान अपनी ओर खींच लेती लेकिन अपशकुन के भय से वह चुपचाप बैठी थी। धीरे-धीरे उसका मन बेकाबू होता चला गया। और उकड़ू बनकर हलवाई के कड़ाह के पास जाकर बैठ गई। अचानक रूपा की नजर बूढ़ी काकी पर पड़ी तो आग बबूला हो उठी और बूढ़ी काकी को खूब भला-बुरा कहा। अपमानित होकर भी बूढ़ी काकी कुछ नहीं बोली और रोती हुई चुपचाप अपनी कोठरी में चली गई।

Scanned with CamScanner

काफी समय बीत जाने के बाद भी बूढ़ी काकी की किसी ने सुध नहीं ली तो उसका मन बेचैन हो उठा। तरह-तरह के विचार उसके मन में आने लगे। सभी लोग खा-पी चुके होंगे। मेरी याद किसी को नहीं आएगी। इसी बीच उसकी भूख जोर पकड़ने लगी और हाथों के बल सरकती हुई लोगों के बीच जाकर पत्तल पर बैठ गयी। लोग आश्चर्य से देख ही रहे थे कि बुद्धिराम की नजर उस पर पड़ गयी। उस दबंग बूढ़ी काकी को बुद्धिराम ने दोनों हाथों से उठाकर कोठरी में लाकर पटक दिया और खूब भला-बुरा कहा। वह यह भूल गया कि आज उसे जो सम्मान मिल रहा है, वह सब बूढ़ी काकी की सम्पत्ति के कारण ही है।

रह रहकर बूढ़ी काकी स्वयं को कोसती रही। कभी सोचती कि वहां नहीं जाना चाहिए था। बिना खाए मैं मर तो नहीं जाती। इतना दुर्व्यवहार होने पर भी बूढ़ी काकी का मन दावत में रमा हुआ था। कभी कचौड़िया याद आतीं तो कभी स्वादिष्ट रायता, लेकिन लाडली के अलावा बूढ़ी काकी के प्रति किसी के मन में कोई सहानुभूति नहीं थी।

रात के ग्यारह बज चुके थे। सभी मेहमान आराम कर रहे थे। हारी-थकी रूपा भी सो चुकी थी, लेकिन लाडली थी जो जाग रही थी। वह उस समय

Scanned with CamScanner

की प्रतीक्षा में थी जब अपने हिस्से का मिला हुआ खाना बूढ़ी काकी को जाकर खिलाए। रूपा का पता लगने पर पिटाई होने का डर था। माँ को सोता देखकर लाडली चुपके से अपने हिस्से की पुड़िया लेकर काकी के पास पहुँची। बेसब्री से प्रतीक्षा कर रही बुढ़िया एक ही झटके में सब खा गयी परन्तु इससे उसकी भूख और बढ़ चुकी थी। उसने लाडली से मेहमानों के भोजन करने के स्थान पर ले चलने को कहा परन्तु वहाँ पड़े टुकड़ों को चुन-चुनकर खाने के बाद भी उसकी भूख नहीं मिटी। अंत में उसने लाडली से जूठी पत्तलों के पास ले चलने को कहा। इसी बीच रूपा की आँख खुल चुकी थी।

लाडली को अपने पास न पाकर रूपा ने इधर-उधर देखा तो वह पत्तलों के पास खड़ी थी आज उसने बूढ़ी काकी को धमकाया नहीं अपितु उठकर साथ चलने को कहा। उसने सोचा जिस बुढ़िया की सम्पत्ति से हमें इतनी आमदनी हो रही है उसके लिए मैं भरपेट भोजन भी नहीं दे सकी।

ईश्वर से अपने अपराध के लिए क्षमा माँगती हुई रूपा अपने कमरे में गयी और पकवान तथा मिठाई का थाल लेकर बूढ़ी काकी के पास पहुँची। कहानीकार कहता है कि भोजन के उस थाल को देखकर काकी का मन आनन्दित हो उठा। रूपा ने बड़े ही प्यार से भोजन करने के लिए कहा और विनती की कि वह ईश्वर से प्रार्थना कर दे कि

वह हमारा अपराध क्षमा कर दे। बूढ़ी काकी को उस समय स्वर्गिक आनन्द की अनुभूति हो रही थी।

Scanned with CamScanner